



## AATMA-NIRBHAR BHARAT

### आत्मनिर्भरता की दिशा में सहकारी समितियों का योगदान

#### 1. अपूर्वा सिंह

प्रसार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)

#### 2. डॉ. संगीता गुप्ता

प्रसार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)

*Received: August, 2023; Accepted: September, 2023; Published: October, 2023*

भारत एक विविधता से भरा देश है जहां विभिन्न श्रेणियों के लोग रहते हैं। इस विविधता के कारण लोगों को रोजगार की समस्या से निपटने में कठिनाई हो सकती है। बढ़ती आबादी, संकटमय रोजगार मार्गदर्शकों, और भूमिका संगत नौकरियों में कमी के कारण आजकल लोग अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं। इस समस्या को हल करने के लिए 'आत्मनिर्भरता' एक महत्वपूर्ण उपाय है जो लोगों को स्वयं से रोजगार का अवसर प्रदान करता है।

#### सहकारी समिति क्या है?

सहकारी समिति एक ऐसा संगठन है जिसमें विभिन्न व्यक्ति या संघ के लोग एकत्र होते हैं और साझा उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सहयोग करते हैं। यह संगठन दृढ़ता और संयम के साथ चलता है और सभी सदस्यों को एक सामान्य लक्ष्य के दिशा में मिलकर

आत्मनिर्भर भारत के अभियान का मुख्य उद्देश्य है भारत को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना, स्वदेशी उत्पादन को प्रोत्साहित करना और देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना। इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने में सहकारी समितियों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। यहां हम देखेंगे कि सहकारी समितियां आत्मनिर्भर भारत की दिशा में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

काम करने का अवसर प्रदान करता है। सहकारी समितियां व्यापार, कृषि, वित्त, उद्योग और शिक्षा आदि के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रहती हैं और नए उद्यमियों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करती हैं।

## सहकारी समितियों का आत्मनिर्भरता के साथ संबंध:

आत्मनिर्भरता अर्थात् 'स्वयं निर्भर होना' एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति या समूह अपनी संगठनाओं, उत्पादन, वित्तीय और आर्थिक अवसरों को स्वयं नियंत्रित कर सकते हैं। इसमें विदेशी देशों से आयातित वस्तुएं कम होती हैं और देश के अंदर उत्पादित सामान का उपभोग बढ़ जाता है। सहकारी समितियां इस दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान करती हैं।

**1. रोजगार का सृजन:** सहकारी समितियां विभिन्न उद्योगों में स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर प्रदान करती हैं। वे स्थानीय उत्पादन और सेवाओं को प्रोत्साहित करके लोगों को स्वयं से रोजगार का अवसर प्रदान करती हैं जिससे उन्हें एक विकसित और सकारात्मक करियर चुनने में मदद मिलती है। उदाहरण के तौर पर, कृषि सहकारी समितियां किसानों को नवीनतम तकनीक और कौशल सिखाकर उन्हें खेती के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाती हैं।

**2. उत्पादक समूह:** सहकारी समितियां उत्पादकों को साझा उत्पादन करने के लिए संगठित करती हैं, जिससे उत्पादन की लागत में कमी होती है और उत्पादों की बिक्री में बढ़ोतरी होती है। इससे उत्पादकों को अधिक मूल्य मिलता है और उन्हें बाजार में अधिक मुद्रा और स्थानीय उत्पादन के प्रोत्साहन का लाभ होता है। उदाहरण के लिए, एक किसान सहकारी समिति अपने किसान सदस्यों को नवीनतम खेती तकनीकों से अवगत कराती है और

उन्हें उचित मूल्य पर उत्पादों की बिक्री का अवसर प्रदान करती है।

**3. आर्थिक सहायता:** सहकारी समितियां आर्थिक सहायता प्रदान करती हैं जो विभिन्न उद्यमियों को उनके व्यापार और उद्योग को बढ़ाने में मदद करती हैं। यह समितियां बैंकों से उचित कर्ज लेती हैं और अपने सदस्यों को ऋण और उधारी के रूप में देती हैं जिससे वे अपने व्यवसाय का प्रबंधन कर सकते हैं और उसे सफलतापूर्वक चला सकते हैं।

**4. वित्तीय स्वराज्य:** सहकारी समितियां अपने सदस्यों को वित्तीय स्वराज्य प्रदान करती हैं। इससे उन्हें ऋण लेने की आवश्यकता कम होती है और उन्हें आर्थिक रूप से स्थिरता मिलती है। सहकारी समितियां अपने सदस्यों को अधिक ब्याज दर और ऋण के अवसर प्रदान करके उन्हें वित्तीय स्वराज्य प्राप्त करने में मदद करती हैं।

**5. शिक्षा और प्रशिक्षण:** सहकारी समितियां अपने सदस्यों को उच्चतर शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करती हैं। यह सदस्यों को नवीनतम तकनीकों और कौशलों का लाभ मिलता है जिससे उन्हें अपने उद्योग या व्यापार में सुधार करने का मौका मिलता है। उदाहरण के लिए, एक सहकारी समिति अपने कर्मियों को विभिन्न शिक्षा और प्रशिक्षण के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है जिससे उन्हें नवीनतम तकनीकों और कौशलों का प्रशिक्षण मिलता है।

**आत्मनिर्भरता भारत के लिए एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है जिसमें सहकारी समितियों का बड़ा योगदान है। इन समितियों के माध्यम से लोग स्वयं को समृद्ध बनाकर देश के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। सहकारी समितियां न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करती हैं बल्कि उत्पादन और वित्तीय स्वराज्य के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से योगदान करती हैं। इसलिए, हमें सहकारी समितियों को समर्थन करना और इनके विकास को प्रोत्साहित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से हम सभी मिलकर एक आत्मनिर्भर और समृद्ध भारत का निर्माण कर सकते हैं।**